Govt. Degree College Bhojpur, Moradabad

Name - Madhu Tyagi

Email - Madhutyagi881@gmail.com

Stream - Arts

Name of course - B.A I

Name of Sub - History

Name of Topic - Arab Invasion

Name of Sub-Topic - Rise of Turks, causes of Success of Arab Invasion

Meta-data Keywords: Arab Invasion

Type - Text Pdf

Scanned with CamScanner

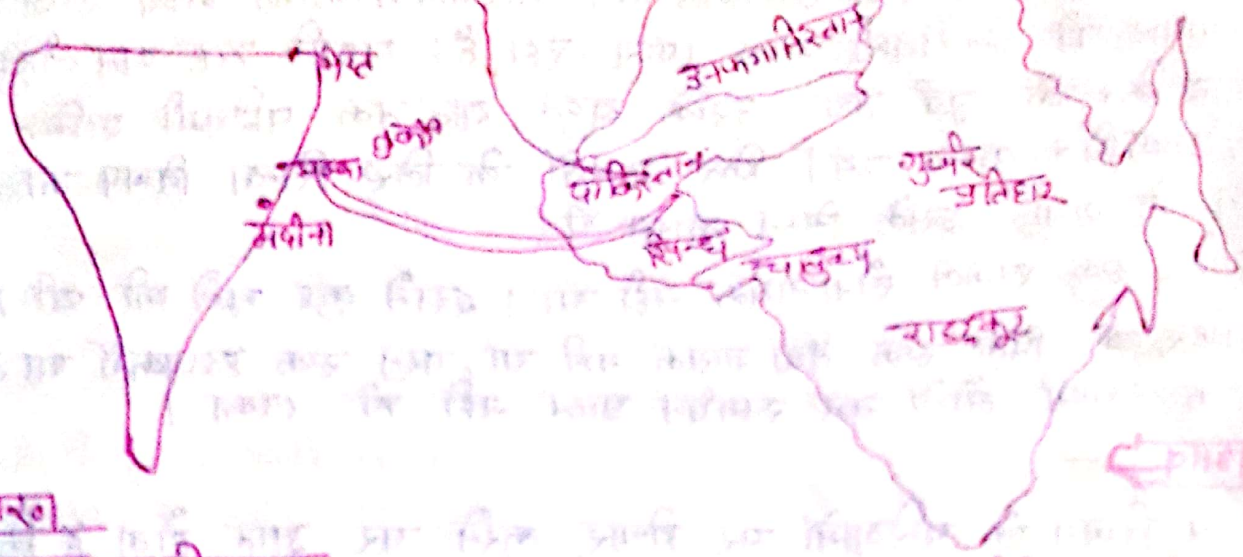

कारण

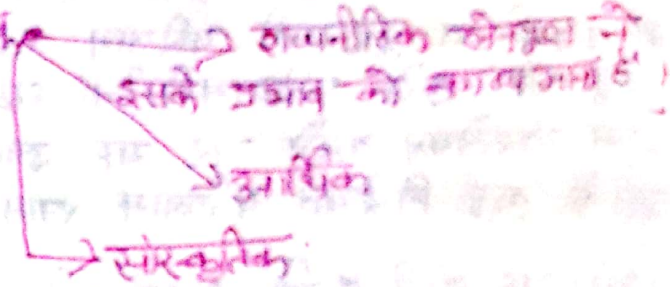

(1) साम्राज्य विस्तार
(2) धर्म प्रचार
(3) धन की लूट
(4) मध्य एशिया के व्यापार पर अधिपत्य
(5) समुद्री लुटेरों का दमन

प्रभाव → राजनीतिक कौतूहल ने इसके प्रभाव को व्यापक माना है।
→ आर्थिक
→ सांस्कृतिक

सिन्ध विजय → भारत मे इस्लामी शक्ति पहली सफलता थी। सिन्ध विजय के राजनीतिक व सांस्कृतिक दोनों प्रकार के प्रभाव उत्पन्न हुए। किन्तु राजनीतिक प्रभाव की तुलना मे सांस्कृतिक प्रभाव अधिक व्यापक रहा। इस समय अरबो ने पश्चिम विश्व मे भारत के सांस्कृतिक राजदूत की भूमिका निभाई (चाचनामा) के फारसी अनुवाद तथा (अलबिलादुरी) के ग्रन्थ (फुतुह उल बलदान) मे सिन्ध विजय की सूचना मिलती है। अपनी स्थापना के दिनो से ही इस्लामी शक्ति प्रसार की ओर उन्मुख थी। मुहम्मद पैगम्बर की मृत्यु के 8 वर्षो के अन्दर ही मिस्र और सीरिया पर इस्लामी शक्ति का कब्जा हो गया। फिर 650 से 709 के बीच इस्लाम ने एशिया यूरोप तथा अफ्रीका पर एक भाग पर अपनी शक्ति का विस्तार कर लिया। इस प्रकार एक बड़े इस्लामी साम्राज्य की स्थापना हुई किन्तु इस्लाम को भारत मे लगभग 70 साल इंतजार करना पड़ा।

इस प्रकार एशिया यूरोप तथा अफ्रीका की तुलना मे भारत मे लम्बे काल तक अरब शक्ति का प्रयोग किया। अन्ततः 712 ई० की मुहम्मद बिन-कासिम को सफलता मिली। वह अरब के गवर्नर अल-हज्जाज का दामाद था उसे अल हज्जाज ने सिन्ध के शासक दाहिर को दण्डित करने के लिए भेजा था। वस्तुत अरब आक्रमण का तात्कालिक कारण सिन्ध के अरब सागर मे ऐसे जहाज को लूट लेना बताया जाता है। जो खलीफा के लिए उपहार लेके जा रहा था। साथ ही वहाँ उपस्थित दुर्व्यवहार भी किया था। फिर सिन्ध के शासक दाहिर द्वारा लुटेरों को दण्डित न करने पर और मुआवजा की राशि न देने पर अरब

खत्म हो गयी। किन्तु इस आक्रमण का वास्तविक ... यद्यपि यह धन लोलुपता के व्यापार में हिस्सेदारी माना जाता रहा है। पश्चिमी शक्ति को अरब शक्ति के पूर्व तथा उसके बहुत बाद तक पश्चिमी शक्ति को सिन्ध विजय का रास्ता बहुत आकर्षित करती रही। फिर अरबों के लिए सिन्ध विजय का रास्ता आसान हो गया। इसके भिन्न कारण थे-

(1) दाहिर एक सफल सेनानायक नहीं था। इसने कुछ भूले की थी।

(2) दाहिर का पिता एक वैध शासक नहीं था, वरन् एक हड़पकर्ता था अत: अरब के स्थायी लोगों का समर्थन प्राप्त नहीं हो सका।

8) प्रभाव→

सिन्ध विजय के परिणामों पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि इससे राजनीतिक महत्वपूर्ण व दूरगामी परिणाम हुए यद्यपि आरम्भ में इसे राजनीतिक दृष्टि से इसे परिणामविहीन घटना करार दे दिया गया था। किन्तु सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि राजनीतिक क्षेत्र में भी इसके कुछ निश्चित परिणाम सामने आये।

यद्यपि यह सही है कि अरब शक्ति महज भारत के एक दूरवर्ती क्षेत्र में ही यथा सिन्ध में ही सिमट कर रह गयी थी। और जब इसने भारत की मुख्य भूमि पर प्रसार को गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट तथा चालुक्य शक्ति आदि ने रोक दिया। किन्तु यह भी सत्य है। कि अरब आक्रमण को विफल बनाकर ही भारत में गुर्जर प्रतिहार राष्ट्रकूट चालुक्य जैसी शक्ति ने वैधता प्राप्त की। फिर यह अपने आप में एक अकेली घटना नहीं थी, क्योंकि मध्ययुगीन यूरोप में भी कुछ ऐसे शासक हुए जिन्होंने इस्लामी शक्ति के विरुद्ध सफलता प्राप्त कर अपने राजवंश को पहचान दिलाई।

फिर अरबों ने इस्लामी राज्य व्यवस्था की व्याख्या भारतीय परिस्थितियों के अनुसार की तथा इस्लाम धर्म एवं इस्लामी राज्य व इस्लामी सत्ता एक प्रकार का सामंजस्य बनाये रखा। दूसरे शब्दों में उन्होंने मूर्ति पूजकों को भी जिम्मी ~~देवा~~ का दर्जा देकर जजिया कर के बदले सैनिक सेवा से मुक्त कर दिया। फिर आगे तुर्कों को अरबों के राज्य का बना बनाया मॉडल प्राप्त हो गया। इस प्रकार भारत में इस्लामी राज्य का आधार निर्मित हुआ।

फिर मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध विजय के पश्चात राजनीतिक क्षेत्र में एक नयी पहल की उसने स्थानीय लोगों को कुछ सहायता देकर उनकी सहायता की फिर उसकी नीति का भारत में बाद के मध्यकालिन शासकों द्वारा अनुसरण किया गया। जिसे अकबर की राजपूतों के प्रति नीति के तहत देखा जा सकता है। इसके साथ ही अरबों द्वारा नये नगरों मन्सूरा, करांची, महफूजा (हैदराबाद सिन्ध) व मूल्तान आदि का निर्माण किया गया। जो आगे चलकर नये राजनीतिक क्षेत्र के रूप में उदीत हुई।

Scanned with CamScanner

अरब आक्रमण

⇒ मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई० मे हुआ था।

⇒ हिजरी संवत 622 मुहम्मद साहब का मक्का से मदीना पलायन।

⇒ जब मुहम्मद साहब मदीना पहुँचे तो मदिना वासियों ने इन्हे समान दिया मदीना वालों ने मक्का पर आक्रमण किया।

⇒ मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई० मे सिन्ध पर आक्रमण किया।

⇒ सिन्ध शासक दाहिर राजधानी ब्रहमणाबाद थी।

⇒ अरबों ने यहाँ मूर्ति पूजको को जिम्मी का दर्जा देकर जजिया करके बदले इन्हे सैनिक सेवा से मुक्त कर दिया।

⇒ भारत मे पहली बार जजिया कर 712 ई० मे और अन्तिमरूप से समाप्त हुआ (1720) (मुहम्मदशाह) के शासन काल मे।

⇒ अकबर की राजपूत नीति के लक्षण अकबर सिन्ध की नीतियों मे देखे जा सकते है।

⇒ सिन्ध विजय का उल्लेख (चाचनामा) व अलबिलादुरी के कुतुठलअ दान मे देखा जा सकता है।

⇒ अरब आक्रमण के प्रभाव राजनीतिक से सांस्कृतिक अधिक रहे।

⇒ मन्सूरा, महफूजा, हैदराबाद अरबो ने बसाये।

⇒ खजूर की खेती और ऊँट की प्रजाति से अवगत कराया।

⇒ अरब शक्ति को भारत मे रोकने से चालुक्य, गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

⇒ अंकमाला, दशमलव, शून्य इससे भारतीयों को अरबो ने परिचित क

⇒ अरब आक्रमण से सिन्ध क्षेत्र मे इस्लाम धर्म व इस्लामी जनसंख का प्रसार हुआ। फिर भारतीयों के सम्पर्क मे आने से एक दूस के आचार - विचार को ग्रहण किया।

किन्तु राजनीतिक प्रभाव से मुक्त कर दिया की तुलना में सांस्कृतिक प्रभाव कहीं अधिक रहा। अरबों ने पूर्वी विश्व और पश्चिमी विश्व के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सेतु का काम किया क्योंकि यही वह काल है जब भारत के स्वीकार यह घोषित करते है, जहाँ कुश घास पैदा न हो जहां काले हिरन विचरन न करते हो वहां हिन्दु को यात्रा नही करनी चाहिए। पश्चिम विश्व को इतना लाभ मिला कि 16 वी सदी मे यूरोप में होने वाले पुर्नजागरण मे भी इसकी अप्रत्यक्ष भूमिका रही।

इस काल मे अलमोमीन तथा हारून अलरशीद जैसे उदार खलीफा आये फिर यही काल है जब वेदउल हुकमत (अनुवाद विभाग) की स्थापना हुई एवम महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अरबी मे अनुवाद हुआ। अरबों के माध्यम से पश्चिमी विश्व शून्य, अंकमाला का ज्ञान प्राप्त किया पश्चिम लोगो ने अरबों के माध्यम से बीजगणित का ज्ञान प्राप्त किया।

यूरोप मे नव प्लेटोवाद पश्चिम एशिया मे सूफी चिन्तन के विकास मे भी भारतीय चिन्तन का प्रभाव माना जा सकता है। सिन्ध विजय के पश्चात बहुत से सूफी सन्त भारत मे पंजाब सिन्ध आदि क्षेत्रों मे स्थापित हुए। फिर इन सन्तों द्वारा इस्लाम का मानवीय स्वरूप तैयार किया गया।

सामाजिक जीवन के क्षेत्र मे अरब सम्पर्क का प्रभाव यह हुआ इस क्षेत्र मे इस्लाम का प्रसार प्रारम्भ हुआ। एवम मुस्लिम जनसंख्या का विस्तार हुआ। इससे स्थानीय प्रथाओं को और रीति-रिवाज को यहाँ अपनाया गया। जबकि मुस्लिम रीति-रिवाज को स्थानीय जनता ने भी अपनाना शुरू किया। इससे एक समन्वित संस्कृति का विकास हुआ। और इससे यह विकास मध्य काल तक बना रहा।

अरबों ने खगोल विज्ञान के सिद्धान्त भी भारत से ग्रहण की। पंचतन्त्र की अरबी भाषा मे दासताना की रचना की। और फिर सांस्कृतिक आदान-प्रदान सिन्ध ने अरब शासन के बाद भी जारी रहा।

फिर अरबों के सम्पर्क से वाणिज्य-व्यापार को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। खजूर की खेती एवम ऊँट पालन की नयी विधि भारत ने यहीं से ग्रहण की फिर चर्म शिल्प को बढ़ावा देने के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय बाजार इन्हीं के द्वारा उपलब्ध कराया गया। इससे व्यापार वाणिज्य को गति प्रदान हुई मुद्रा प्रचलन का विकास हुआ जोकि चाँदी के सिक्के दिरहम के इस क्षेत्र मे प्रचलन से दृष्टिगोचर होता है। फिर व्यापार-वाणिज्य की उन्नति के कारण नये शहरी केन्द्रों का विकास मंसूरा, महफूजा के रूप मे दिखाई दिया। ये क्षेत्र आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु बने।

Scanned with CamScanner

किन्तु राजनीतिक प्रभाव ~~से मुक्त कर दिए~~ की तुलना मे सांस्कृतिक प्रभाव कहीं अधिक रहा। अरबों ने पूर्वी विश्व और पश्चिमी विश्व के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान मे सेतू का काम किया क्योंकि यही वो काल है जब भारत के स्मृतिकार यह घोषित करते है, जहाँ कुश घास पैदा ना हो जहाँ काले हिरन विचरण न करते हो वहाँ हिन्दू को यात्रा नही करनी चाहिए। पश्चिम विश्व को इतना लाभ मिला कि 16 वी सदी मे यूरोप मे होने वाले पुर्नजागरण मे भी इसकी अप्रत्यक्ष भूमिका रही।

इस काल मे अलमोमीन तथा हारून उलरसीद जैसे उदार खलीफा आये फिर यही काल है जब बेदउलहुकमत (अनुवाद विभाग) की स्थापना हुई एवम महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अरबी मे अनुवाद हुआ अरबों के माध्यम से पश्चिमसेविश्व शून्य अंकमाला का ज्ञान प्राप्त किया ~~पश्चिम~~ पश्चिम लोगो ने अरबों के माध्यम से बीजगणित का ज्ञान प्राप्त किया।

यूरोप मे नव ल्टोवाद पश्चिम एशिया मे सूफी चिन्तन के विकास मे भी भारतीय चिन्तन का प्रभाव माना जा सकता है।

सिन्ध विजय के पश्चात बहुत से सूफी सन्त भारत मे पंजाब सिन्ध आदि क्षेत्रों मे स्थापित हुए। फिर इन सन्तों द्वारा इस्लाम का मानवीय स्वरूप तैयार किया गया।

सामाजिक जीवन के क्षेत्र मे अरब सम्पर्क का प्रभाव यह हुआ इस क्षेत्र मे इस्लाम का प्रसार प्रारम्भ हुआ। एवम मुस्लिम जनसंख्या का विस्तार हुआ। इससे स्थानीय प्रथाओं को और रीति-रिवाज को यहाँ अपनाया गया। जबकि मुस्लिम रीतिरिवाज को स्थानीय जनता ने भी अपनाना शुरु किया। इससे एक समन्वित संस्कृति का विकास हुआ। और ~~इससे~~ यह विकास मध्य काल तक बना रहा।

भी जारी रहा।
फिर अरबों के सम्पर्क से वाणिज्य-व्यापार को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। खजूर की खेती एवम ऊँट पालन की नयी विधि भारतीयों ने इन्हीं से ग्रहण की फिर चर्म शिल्प को बढ़ावा देने के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय बाजार इन्हीं के द्वारा उपलब्ध कराया गया। इससे व्यापार वाणिज्य को गति प्रदान हुई मुद्रा प्रणाली का विकास हुआ जोकि चाँदी के सिक्के दिरहम के इस क्षेत्र में प्रचलन से दृष्टिगोचर होता है। फिर व्यापार-वाणिज्य की उन्नति के कारण नये शहरी क्षेत्रों का विकास मंसूरा, महफूजा के रूप में दिखाई दिया। ये क्षेत्र आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु बने।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक क्षेत्र में अरब शासन की भूमिका सीमित रहती है। सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में यह प्रभाव अधिक निर्णायक रहे। फिर यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए महत्वपूर्ण सांस्कृतिक क्षेत्र अवधारणा बने।

अरब आक्रमण के प्रभाव

- → भारतीय क्षेत्रीय राजनीतिक स्वरूप मिला
- → अरबों ने इस्लाम धर्म व इस्लामी अनुयायियों में स्थापित करके तुर्कों को एक आधार प्रदान किया
- → स्थानीय तत्वों को प्रशासन में सहयोगी बनाकर प्रशासन में सहयोग प्रदान किया।

सांस्कृतिक परिणाम

- → वेदान्त से सूफीवाद व नव प्लेटोवाद
- → पश्चिम को अंकगणित खगोल का ज्ञान कराया
- → सूफीवाद से इस्लाम का मानवीय स्वरूप प्रदान किया
- → समन्वित संस्कृति का विकास पूर्वी व पश्चिमी विश्व के बीच राजदूत की भूमिका।

आर्थिक प्रभाव

- → वाणिज्य व्यापार को प्रोत्साहन दिरहम सिक्के की उत्पत्ति
- → चर्म उद्योग को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार
- → खजूर की खेती व ऊँट की प्रजाति का विकास
- → नये शहरी केन्द्रों का नये व्यापारिक केन्द्रों का विकास
- → मौद्रिक प्रणाली का विकास कृषि को प्रोत्साहन

राजपूतों की पराजय के कारण

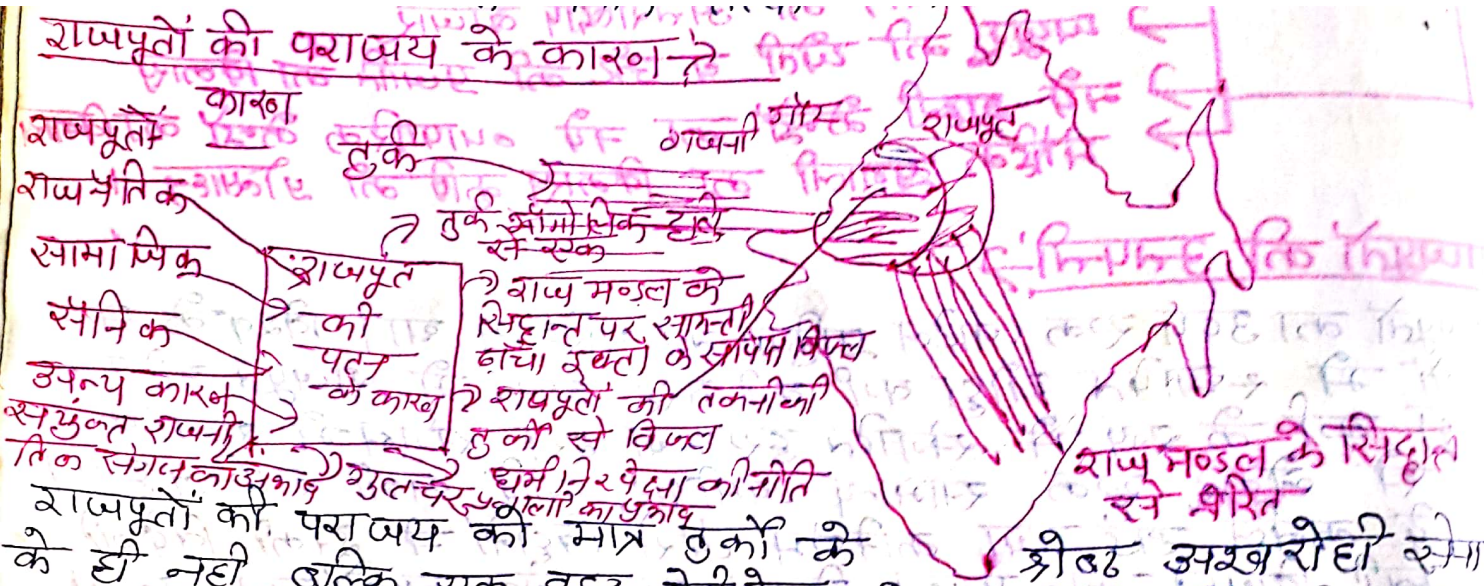

कारण

राजपूतों तुर्क गजनी गौरी राजपूत

राजपूतों की पराजय को मात्र तुर्कों के श्रेष्ठ अश्वरोही सेना के ही नही बल्कि एक वृहद् परीपेक्ष्य मे समझे जाने की आवश्यकता है। अर्थात इसे 750 से 1200 ई० काल की वृहद् सा० आर्थिक राजनीतिक परीस्थितयों के पूरी पेक्ष्य मे समझा जा सकता है। राजपूतों की पराजय मे श्रेष्ठ तुर्की अश्वरोही सेना सैन्य रणनीति स्वयं नेतृत्व ने एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहि किया था।

तुर्क युद्धप्रिय थे जबकि राजपूत शान्ति प्रिय थे।

भौगोलिक दृष्टि से बलिष्ठ थे। विरोध - महमूद ने भारतीय क्षेत्र से अपनी सेना मे भरती की थी।

वस राजपूत युद्धप्रिय नही थे बल्कि वो आन्तरिक युद्ध मे व्यस्त रहते थे युद्ध उनके लिए कला थी। तुर्क भी हमेशा इस्लाम को मानने वाले उच्च नैतिक आचरण से बंधे विजित नहीं होते थे तर्क भी हमेशा नही आते

राजपूत कालीन राजनीतिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी कि ये अपने वंश अपने रक्त सम्बन्ध अपनी भूमि से लगाव रखते थे। यही मुख्य विषय था कि वे तुर्क आक्रमण के समय प्रतिरोध के लिए कोई अखिल भारतीय संगठन कायम नहीं कर सके यद्यपि 17 वीं शताब्दी के लेखक फारिश्ता ने बताया है कि चन्देल शासकों के अधीन राजपूतों ने महमूद गजनवी के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा कायम किया था। किन्तु नवीन शोधों के आधार पर इस मत की मान्यता पर प्रमाणिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया। वस्तुतः राजपूती राजनीतिक व्यवस्था राजमण्डल की अवधारणा पर आधारित थी। जिसमें पड़ोसी को शत्रु समझा जाता था। और फिर आगे चलकर यही अव्यवस्था उनकी आन्तरिक कमजोरी का कारण बन गयी और फिर अन्ततोगत्वा राजपूत बाह्य आक्रमण ~~करने में~~ का सामना करने में विफल रहे।

फिर प्रशासनिक क्षेत्र में यदि राजपूतकालीन ढाँचे को तुर्की ढाँचे के सापेक्ष देखा जाता है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि तुर्की शासन व्यवस्था अधिक विकसित पद्धति का प्रतिनिधित्व कर रही थी दूसरे शब्दों में तुर्कों की इक्ता व खालिसा की पद्धति, राजपूतों की सामन्तीय पद्धति की तुलना में कहीं अधिक बेहतर थी क्योंकि इसमें केन्द्रीयकरण का तत्व तो था ही साथ ही सुल्तान के आर्थिक संसाधन सुल्तान की अनुकूल स्थिति का प्रतिपादन कर रहे थे। जबकि राजपूत उससे इस दृष्टि में पिछड़ गये थे।

Scanned with CamScanner

गया था।

हिन्दु समाज कठोर वर्णव्यवस्था व जाति व्यवस्था पर आधारित फिर पूर्व मध्य काल तथा सामाजिक जटिलता एवम संकीर्णता और अधिक बढ़ गयी थी। यद्यपि यह भी सही कि मुस्लिम समाज भी कोई आदर्श समाज नहीं था। दूसरे शब्दों मे यदि हिन्दु समाज वर्ण और जाति के आधार पर विभाजित था तो मुस्लिम समाज भी नस्लीय आधार पर विभाजित हो चुका था। लेकिन फिर भी इतना तो माना जा सकता है कि मुस्लिम समाज मे हिन्दु समाज की तुलना कहीं अधिक सा० गतिशीलता थी वहाँ प्रतिभा को आगे बढ़ने की बेहतर गुंजाइश थी। दूसरे शब्दों मे एक गुलाम भी अपनी प्रतिभा के दम पर उच्चतर स्थान प्राप्त कर सकता था। जबकि भारतीय समाज कूप मण्डूकता से ग्रस्त हो चुका था और सर्वांगिकता का सिद्धान्त भी बाधित हुआ था।

फिर यदि हम तुर्की एवम भारतीय सैनिक पद्धति पर दृष्टिपात करते हैं तो देखा जा सकता है कि तुर्क भारत मे प्रचलित सैनिक तकनीकि की तुलना मे कहीं बेहतर सैन्य प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उदाहरणार्थ, भारत मे चतुरंगणी सेना की अवधारणा थी जिसमे साज सज्जा एवम भारीपन पर विशेष महत्व दिया जाता था।

घोडे पर बैठ तीरंदाज था जिस पर गति के साथ अचूक निशाना लगाने की महारत थी। इसने इसकी मारक क्षमता को बढ़ा दिया व युद्ध प्रणाली में भी गतिशीलता ला दी इस प्रकार तुर्क सेना की गतिशीलता उनकी विशेषता बन गयी थी।

फिर राजपूत राज्यों के पास बेहतर गुप्तचर व्यवस्था का भी अभाव रहा था जिस कारण व शत्रु पक्ष की अग्रिम सूचना पाने में असक्षम रहे, साथ ही वह अपने शत्रु पक्ष की शक्ति का आकलन नहीं कर सके जबकि तुर्क इस क्षेत्र में भी तुर्क इससे आगे निकल गयी थी। इसके अतिरिक्त तुर्कों अवसरवादी नीति से ग्रस्त थे जिसके तहत व किसी भी मुक मौके से चूकना नहीं चाहते थे उनकी कथनी व करनी में अन्तर होता जिसके लिए वह कोई भी तरीका अपनाने से नहीं चूकते थे वहीं राजपूत योद्धा नीति व आचरण के माध्यम से छलकपट आदि से दूर रहकर धर्मयुद्ध करते थे।

फिर यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से राजपूत राज्यों की नीति का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि राजपूतों राज्यों का लक्ष्य सुरक्षात्मक ही गया था।

इस प्रकार कुछ मूलभूत कमजोरियों के कारण राजपूत राज्य तुर्कों आक्रमण का सामने करने में विफल रहे क्योंकि तुर्क भारतीय राज्यों की तुलना में एक बेहतर पद्धति का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। फिर मुस्लिम बंधुत्व के नारे ने उन्हें बेहतर संग हित कर दिया था। वहीं इक्ता व खालिसा पद्धति ने उनके सैन्य आधार को मजबूत बना दिया था इस प्रकार तुर्कों की जीत एक सैनिक जीत नहीं थी बल्कि यह एक नयी पद्धति की भी जीत थी।

Scanned with CamScanner